

होता है 2. शहतूत का फल, अमरूद 3. धूर्त, मूर्ख।

**बेदार** पुं. (फा.) सचेष्ट, जो सोकर उठा हो, चेतना वाला, जाग्रत अवस्था वाला।

**बेदिल** पुं. (फा.) जिसका हृदय दुखी हो, खिन्न हृदय, निराश, उदास।

**बेधड़क** पुं. (फा.+तद्.) भय बिना, डरे बिना, सोचे समझे बिना, निस्संकोच।

**बेधना** क्रि.स. (तत्.) छेदन, छेद करना, चोट करना, नुकीली वस्तु चुभाना।

**बेधिया** वि. (तद्.) 1. बेध करने वाला, छेदकर घुसने वाला 2. हाथी को नियंत्रित करने वाला नोकदार उपकरण, अंकुश।

**बेनजीर** वि. (फा.) उपमारहित, अनुपम।

**बेनागा** पुं. (फा.) अंतर के बिना, क्रमशः, लगातार, बराबर।

**बेनी** स्त्री. (तद्.) वेणी, स्त्रियों की केश वेणी, केशबंधन।

**बेपनाह** वि. (फा.) जिससे रक्षा या हिफाजत न हो सके, निराश्रय।

**बेपर** वि. (फा.) 1. बिना पर के या बिना पंख के 2. जिसका आधार न हो मुहा. बेपर की उड़ाना-निराधार गप्प हाँकना।

**बेपरवाह** वि. (फा.) चिंता के बिना, निश्चित निश्चिंत।

**बेपानी** वि. (फा.+देश.) 1. जिसमें पानी न हो, निर्लज्ज व्यक्ति, स्वाभिमान रहित, अप्रतिष्ठित 2. धार या शान रहित अस्त्र।

**बेपेंदी** स्त्री. (फा.+हि.) जिसमें नीचे की तली या पेंदा न हो जैसे- बेपेंदी का लोटा या बेपेंदी की बाल्टी।

**बेफिक्र** वि. (फा.+अर.) बिना चिंता के या बिना फिक्र के, निश्चित, लापरवाह।

**बेबस** वि. (फा.+देश.) जो वश में न हो, विवश।

**बेबसी** स्त्री. (फा.+देश.) विवश होने का भाव, पराश्रयता, विवशता।

**बेबाक** वि. (फा.+अर.) 1. निश्चित 2. स्पष्टवक्ता, संकोचहीन 3. ऋण चुका देने वाला व्यक्ति।

**बेबाल/बेताल** पुं. (फा.+तत्.) 1. पुराने युग में राजा महाराजाओं को प्रातः जागरण के समय स्तुति गीत गाकर जगाने वाला, भाट, बंदी, चारण या वैतालिक 2. भूतपिशाच वर्ग का एक प्राणी, उपासना द्वारा जिसे अपने अनुकूल कर लिया जाय वि. बिना ताल वाला।

**बेबी** पुं./स्त्री. (अं.) छोटा बच्चा, अल्पवय शिशु, किसी चीज का लघुरूप। baby

**बेबुनियाद** वि. (फा.) 1. जिसकी बुनियाद न हो, आधारहीन 2. असंगत या झूठ।

**बेभाव** वि. (फा.+देश.) जो बिना किसी हिसाब या गिनती का हो मुहा. बेभाव की पड़ना- अत्यधिक मार पड़ना।

**बेमजा** वि. (फा.+बेमज) रसहीन, आनंदरहित जैसे- किसी कार्यक्रम में बाधा पड़ जाने पर वह कार्यक्रम बेमजा कार्यक्रम हो जाता है।

**बेमानी** वि. (फा.+अर.) जिसकी कोई सार्थकता न हो, निरर्थक, फलरहित।

**बेमियादी** वि. (फा.+अर.) जिसकी मियाद न हो, जिसकी सीमा न हो या अवधि न हो, सीमाहीन।

**बेमिसाल** वि. (फा.+अर.) जिसकी उपमा न हो, जिसका प्रतिद्वंद्वी न हो, अप्रतिम, बेजोड़।

**बेमुरव्वत** वि. (फा.+अर.) जिसमें मुरव्वत न हो, निःसंकोची, निष्ठुर।

**बेमेल** वि. (फा.+देश.) जिसका किसी से मेल न बैठे, अनमेल।

**बेमौका** वि. (फा.) बिना अवसर का, असमय, जिसमें औचित्य का अभाव हो, अनुचित।

**बेमौत** क्रि.वि. (फा.+देश.) मृत्यु आए बगैर, जीवितावस्था में ही।